VISION IAS

www.visionias.in

ESSAY

Name of Candidate	Prachi Chouhan		Test Code	2576
Medium Hindi/Eng.	Hindi	Registration Number		1017622
Centre		Date		18/08/2024

INDEX TABLE

Section	Maximum Marks	Marks Obtained
A	125	
B	125	
Total Marks Obtained:		

Important Instructions

1. The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

   प्रवेश–पत्र में प्राधिकृत माध्यम में **निबन्ध** लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएंगे।
2. Word limit, as specified, should be adhered to.

   प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द–संख्या के अनुसार होने चाहिए।
3. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

   प्रश्न–सह–उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ भाग को पूर्णतः काट दीजिए।

Remarks:

General Instructions

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).

   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक इत्यादि)।
2. Write **two** essay, choosing **one** topic from each of the Sections A and B, in about 1000-1200 words each.

   खण्ड A व B प्रत्येक से **एक** विषय चुनकर **दो** निबन्ध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000–2000 शब्दों का हो।
3. Do not write answers in bad of illegible handwriting. Such answer may not be evaluated.

   उत्तर अस्पष्ट अथवा गन्दी लिखावट में न लिखें। इस प्रकार के उत्तरों का मूल्यांकन नहीं भी किया जा सकता है।
4. Write answers in ink only. Do not use pencil for writing the answer. However, pencil may be used for drawing diagrams, sketches, etc.

   उत्तर स्याही से ही लिखें। उत्तर लिखने के लिए पेंसिल का उपयोग न करें। हालांकि आरेख, चित्र इत्यादि बनाने के लिए पेंसिल का उपयोग किया जा सकता है।
5. Do not write answers in a medium other than the authorized medium in the Admission Certificate. Do not use mixed language, i.e., authorized and unauthorized media together, for writing answers.

   प्रवेश–पत्र में उल्लेख किए गए माध्यम के अलावा अन्य किसी माध्यम में उत्तर न लिखें। अधिकृत और अनधिकृत की मिली–जुली भाषा का भी उपयोग न करें।
6. Write answers at the specified spaces (right below the questions) only. Answers written elsewhere at unspecified spaces in the Booklet shall not be evaluated.

   प्रश्नों के उत्तर ठीक उसके नीचे दिए गए निर्धारित स्थान पर ही लिखें निर्धारित स्थान के अलावा किसी अन्य स्थान पर लिखे गए उत्तर का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।

Is student recommended for One-to-One mentoring?

Recommended	Strongly Recommended

VisionIAS

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. Contextual Competence
2. Structure and Flow
3. Dimensional Coverage
4. Language Competence
5. Length of Essays
6. Creativity Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

VisionIAS

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Evaluation Parameters

- Understanding of Topic
- Introduction Competence
- Body of Essay
  - Dimensions Covered
  - Shortcomings
  - Value Additions/ Missed Dimensions
- Conclusion Competence
- Organization of Essay
- Language and Expression

Macro Comments – Essay 1

Essay Topic:

VisionIAS

VisionIAS™

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

VisionIAS

VisionIAS™

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

VisionIAS

VisionIAS™

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

VisionIAS

VisionIAS™

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

VisionIAS

"यदि कोई व्यक्ति यह नहीं जानता कि उसे किस बंदरगाह की ओर जाना है, तो कोई भी हवा उसके अनुकूल नहीं होती।"

अभी हाल ही में जोनथन हाइट की पुस्तक "The Anxious Generation" ने काफी सुर्खियां बटोरी हैं बताती है, किस तरह हमारी आज की जनरेशन जिसे जूमर्स (जनरेशन Z) की संज्ञा दी जाती है किस तरह मानसिक अवसाद चिंता व दिशाहीनता से पीड़ित है।

जोनथन अपनी पुस्तक में इस युवा पीढ़ी की उदासीनता का प्रमुख कारण अपने लक्ष्य के प्रति अस्पष्टता अर्थात किस बंदरगाह की ओर जाना है, इसके ज्ञान के अभाव को बताते हैं, और सोचने वाली बात यह है, की यह मानसिक समस्या अमीरवर्ग संबन्धित जगहों में जिनके लिए कहा जा सकता है, की जीवन की अनुकूलताएँ उनके पास विद्यमान है, अर्थात हवाएँ उनके अनुकूल होने पर भी उनका लाभ न ले पाना। के मध्य अधिक देखी गयी।

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

ये सभी तथ्य हमें बताते है, की किस प्रकार लक्ष्य व सही दिशा के अभाव मे व्यक्ति अनुकूल परिस्थितियो मे भी भविष्य कुछ भी प्राप्त नही कर पाता है,

हालांकि यह केवल व्यक्ति के ही संदर्भ मे ही उचित नही है, अपितु समाज राष्ट्र व विश्व के लिए भी उतना ही सही है।

जैसा की महान दार्शनिक सुकरात कहते है एक अपरीक्षित जीवन जीने योग्य नही अर्थात स्पष्ट लक्ष्य अभाव मे जीवन महत्वहीन हो जाता है, इसी संदर्भ पर हम अपनी चर्चा को आगे बढ़ा सकते है, जैसे जब बदरंगाह अर्थात लक्ष्य की अभिज्ञता मे अनुकूल परिस्थिति की महत्व हीन है, वही दूसरी ओर लक्ष्य के ज्ञान के साथ विपरीत परिस्थिति मे भी कार्य किया जा सकता है।

साथ ही तृतीय स्थिति भी इस संदर्भ मे महत्वपूर्ण है जब व्यक्ति बिना लक्ष्य के भी इच्छा के साथ आगे बढ़ता जाता है व सफलता प्राप्त कर सकता है।

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अब यदि प्रथम पक्ष पर चर्चा करे तो जहाँ बिना लक्ष्य के अभाव मे अनुकूलतायें भी व्यर्थ है तो सर्वप्रथम उच्चवर्ग मे बढ़ते मानसिक अवसाद जैसा की हमने पहले ही चर्चा की है, के उदाहरण से समझा जा सकता है, उसी प्रकार कई बार समाज मे पितृसत्तात्मक व्यवस्था के संदर्भ मे भी यह उतना ही सत्य प्रतीत होता है, जैसे उच्चवर्गीय महिलाओ मे संसाधन सम्पन्नता पश्चात भी स्वयं मे हीन भावना कोई विशेष बात नही है,

यही तर्क आप इतिहास मे उपनिवेशवादी ताकतो के संदर्भ मे भी दे सकते है, जब ब्रिटिश फ्रेंच जैसी शक्तियाँ भारत मे उपनिवेश बना रही थी, तब भारतीय शासको के पास पर्याप्त शक्ति संसाधन उपलब्ध थे, यदि कहे तो ब्रिटिश कम्पनियो से भी अधिक परन्तु स्पष्ट लक्ष्य के अभाव मे अर्थात वे वाणिज्यवादी कम्पनियो के वास्तविक इरादो को नही जानते थे, उनकी पराजय का प्रमुख कारण रही।

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक कार्लयुंग भी

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अपनी रचना अनडिस्कवर्ड कंट्री में इस बात पर बल देते हैं की बिना लक्ष्य के अथवा स्पष्ट उद्देश्य के अच्छी परिस्थितियों से भी कोई परिणाम प्राप्त नहीं होते जैसे

"सुबह से शाम होती है, जिन्दगी युं ही तमाम होती है,

इसी संदर्भ में हम वैश्विक स्तर पर द्वितीय विश्वयुद्ध से पहले बनी संस्था लीग आफ नेशन को भी देख सकते हैं, जिनके पास स्पष्ट उद्देश्य व समझ के अभाव में वह द्वितीय विश्व युद्ध की महातबाही से विश्व को नहीं बचा सकी।

अब यदी हम अपनी चर्चा के द्वितीय भाग पर दृष्टिपात करें जब व्यक्ति के पास स्पष्ट उद्देश्य अर्थात बदरंगाह की जमझ हो तो विपरीत परिस्थितियाँ भी किस प्रकार सार्थक परिणाम दे जाती हैं।

इसे स्वामी विवेकानन्द की कहानी से समझा जा सकता है, जब वे प्रथम बार अपने गुरु रामकृष्णपरमहंस से मिले तो, गुरुजी ने

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

ने पूछा आप कौन?

तब स्वामी जी का उत्तर था "यही बात जानने के लिए तो मैं आपके पास आया हूँ की मैं कौन?" यहीं से नरेन्द्र से स्वामी विवेकानन्द बनने की यात्रा प्रारम्भ हुयी।

स्वामी जी अपनी पुस्तक कर्मयोग में इस सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा करते हैं कैसे स्पष्ट लक्ष्य व्यक्ति को ऊर्जावान व कठिन परिस्थितियों में भी संकल्पित बनाता है।

ऐसी ही प्रेरणा अपनी दिव्यांगता के बाद भी माउंट एवरेस्ट चढ़ने वाली अरुणिमा सिन्हा की कहानी से भी ली जा सकती है।

यह चर्चा केवल व्यक्ति ही नहीं अपितु समुदाय समाज शब्द के संदर्भ में भी उतनी ही सत्य प्रतीत होती है, जैसे भारतीय समाज सुधार आंदोलन दौरान समाजसुधारकों के समक्ष लोगों के प्रतिरोध, रूढ़िवादी मानसिकता जैसी अनेक समस्याएँ विद्यमान थी, परन्तु समाज सुधारकों का लक्ष्य स्पष्ट था, जिसने उन्हें आगे बढ़ने

VisionIAS

सहायता दी फिर चाहे वह राजा राममोहन राय हो अथवा ईश्वर चन्द्र विद्यासागर।

वैसा ही आप जापान की नीति से भी सीख सकते हैं, जो अब तक कभी उपनिवेश नहीं बना, जब 19वीं सदी में अधिकांश देश गुलाम बनते जा रहे थे, जापान की स्पष्ट समझ उपनिवेशवाद का डट कर ज्ञान उसे उपनिवेशवाद से बचाने में सहायक हुआ

यहाँ तक केवल हमने दो उद्देश्य की समझ की चर्चा की परन्तु इससे आगे बढ़ते हुए न केवल ठीक समझ अपितु निरन्तर प्रयास भी अति महत्वपूर्ण है जो ज्ञान को व समझ को लक्ष्य तक ले जाता है, जैसे जापान में ही चर्चा से समझा जा सकता है जो न केवल उपनिवेशवाद से अपने समझ से बचा अपितु निरन्तर प्रयास से रशिया में एक बड़ी शक्ति के रूप में भी उभरा।

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जैसा की कबीर जैसे महान विचारक भी कहते है – "करत करत अभ्यास ते जड़मति होत सुजान (सुजान)"

अर्थात निरन्तर अभ्यास से मूर्ख व्यक्ति भी ज्ञानी हो सकता है। ऐसी ही अपनी पुस्तक "थिंक एण्ड ग्रो रिच" मे नेपोलियन हिल भी करते है, जो स्पष्ट समझ व उसके लिए प्रयास को सफलता की कुंजी बताते है।

तब हम अपनी अब तक की चर्चा से यह तो समझ ही सकते है की कोई व्यक्ति यह जानता है कि उसके उद्देश्य लक्ष्य क्या है? तब वह परिस्थिति की अनुकूलता प्रतिकूलता पश्चात भी आगे बढ़ा सकता है, व लक्ष्य के ज्ञान के अभाव मे स्थिति विपरीत होती है, चाहे अनुकूल स्थितियाँ भी क्यो न हो, परन्तु इस संदर्भ मे एक आयाम और भी समझा जा सकता है, जब व्यक्ति बिना उद्देश्य

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

व स्पष्ट विजन (संकल्प) के भी आगे बढ़ता है तब भी सफलता प्राप्त कर सकता है, जैसा की स्टीव जॉब्स अपने कई साक्षात्कारों में बताते है, की जब उन्होंने कॉलेज की पढ़ाई बीच में छोड़ी तब उनके पास कोई स्पष्ट उद्देश्य का ज्ञान नहीं था, वह कहते है, की मैं सिर्फ आगे बढ़ना चाहता था, कुछ अलग करना चाहता था परन्तु क्या? यह मैं स्वयं नहीं जानता था।

इसी प्रकार की चर्चा महात्मा गांधी अपनी पुस्तक सत्य के साथ मेरे प्रयोग में भी करते है की कैसे व्यक्ति निरन्तर सीखता जाता है व उसी के आधार पर आगे बढ़ता जाता है, भले ही उसे लक्ष्य की स्पष्ट समझ न हो।

आप वर्तमान वैज्ञानिक अनुसंधानों में भी इसी को देख सकते हो जब वैज्ञानिक बिना किसी निश्चित उद्देश्य के भी नयी खोजों के लिए अनुसंधान करते है व क्या सीखते है, जिसे सामान्यतः ओपन यूनिवर्सल रिसर्च जैसे नाम दिये जाते है।

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

तब क्या यह कहा जा सकता है की बहरंगाह की उचित जानकारी निरर्थक है, तो स्पष्ट शब्दों में नहीं क्योंकी स्पष्ट उद्देश्य का ज्ञान ही है जो व्यक्ति को जीवन में आने वाले संघर्षों कठिनाईयों के समय भी आगे बढ़ने को प्रेरित करता है व वे उसे निरन्तर प्राप्ति के लिए प्रयास करते है,

जैसे जब सिद्धार्थ ने गौतम बुद्ध तक की यात्रा के लिए अपना घर छोड़ा होगा तो उनका उद्देश्य स्पष्ट था केवल दृढ़निश्चय इच्छाशक्ति ने ही उन्हे मार्ग की बाधाओं से लड़ने में सफल बनाया होगा।

निष्कर्षतः हम कह सकते है,

की उद्देश्य का ज्ञान व्यक्ति को अपने लक्ष्य की ओर प्रेरित करता है, जिसे वह दृढ़ इच्छाशक्ति व अभ्यास के द्वारा प्राप्त कर सकता है साथ ही दृढ़ इच्छा व लगन के साथ बिना उद्देश्य की समझ के भी सतत परिश्रम प्राप्त किये जा सकते है, इसका ही परिणाम है की हमारे पास

VisionIAS

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

महात्मा गांधी, नेल्सन मण्डेला, मार्टिन किंग लूथर, स्वामी विवेकानन्द जैसे नेतृत्वकर्ता व युगद्रष्टा के उदाहरण विद्यमान है।

" समझ से ज्ञान है
ज्ञान से उद्देश्य है
उद्देश्यों की प्राप्ति से मानव कल्याण है।"

VisionIAS

"असुरक्षा ही नवाचार, रचनात्मकता और बदलाव का जन्मस्थान है"

आज कक्षा 12 में पढ़ने वाली किशोरी मनु की बोर्ड परीक्षा है, अपनी पढ़ाई अच्छे से पढ़ने के पश्चात भी मनु चिन्तित व असुरक्षित अनुभव कर रही है, तब मनु ने अपनी असुरक्षा विरुद्ध होती भी तरकीब निकाली वह आँख बन्द करके स्वयं से कहती है "मैं अच्छा करूंगी, मुझे जीतना ही है" व उसे दोहराती है, वर्ष 2024 की ओलम्पिक पदक विजेता मनु भाकर अपने साक्षात्कार में कहती है, भय व असुरक्षा के विरुद्ध उनकी यह नवाचारी तकनीक उनके लिए वर्तमान में भी कार्य करती है व वे इसका उपयोग करती है।

यह प्रसंग हमें सीखाता है कैसे "आवश्यकता अविष्कार की जननी है", वैसे मनुष्य जब असुरक्षित होता है, तब नये विचार नवाचार रचनात्मक सोचता है, अब इस असुरक्षा से नवाचार तक की यात्रा हमारे चर्चा का विषय रहेगी, जिसमें सर्वप्रथम यह समझना आवश्यक है की असुरक्षा क्या है?

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

व विविध अनुरक्षाओं के विरुद्ध रचनात्मकता, नवाचार व नया परिवर्तन कैसे समस्या का समाधान संभव बना सकता है?

यदि अनुरक्षा पर बात करें तो किसी संकट के प्रति हमारी सुभेद्यता हमारी अनुरक्षा को दर्शाती है यह बहुआयामी हो सकती है, जैसे यदि हम भौतिक अनुरक्षा की बात करें तो इतिहासकार रोमिला थापर की रचनाएँ बताती हैं कैसे जब मनुष्य के पास संसाधन नहीं थे, पर्याप्त भोजन नहीं था, हिंसक पशु पक्षियों से अनुरक्षा थी तो आग का आविष्कार कितना क्रांतिकारी बदलाव रहा होगा, जो अनुरक्षा की भावना व आवश्यकता से उत्पन्न हुआ होगा।

उसी प्रकार भौतिक अनुरक्षा में प्राकृतिक आपदाओं के प्रति हमारी अनुरक्षा से ही हम आपदा प्रबन्धन व उपयुक्त प्रतिक्रियात्मक दृष्टिकोण

VisionIAS

से आपदा प्रबन्धन व अग्र सक्रियता के नवाचारी दृष्टिकोण को अपना सके, संयुक्त राष्ट्र के "अर्ली वार्निंग फॉर ऑल" के बारे मे आप समझ सकते है।

ऐसी ही कहानी जलवायु परिवर्तन की भी है जो भौतिक असुरक्षा को बढाती है, जिसके विरुद्ध आप क्लाइमेट इंजीनियरिंग, कार्बन ट्रैडिंग व कॉप-28 द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को असुरक्षा प्रति नवाचारी दृष्टिकोण मे देख सकते है।

भौतिक असुरक्षा से आगे बढते हुए यदि सामाजिक असुरक्षा की बात करे तो समाज के वंचित वर्ग जातिगत पूर्वाग्रह, महिलाओ के विरुद्ध अपराध होना की उतकता मे हमी मानवसभ्यता को शर्मसार करने वाली घटना, रंगभेद, सायबर मैला उठाने जैसी व्यापक असुरक्षाओ के विरुद्ध, परम्परागत कानून व निवारक उपायो से इतर,

सामाजिक मनोवृत्ति परिवर्तन जैसे बदलावो को व्हील्स व्हाइट मैटर, सेल्फी विद डॉटर

VisionIAS

VISION IAS™

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

स्लीडाग जैसी फिल्मो, मीट ऊमेन जैसे नवाचारी उपायो से देखा जा सकता है।

अब यदि सामाजिक असुरक्षा से आगे बढ़कर आर्थिक असुरक्षा की चर्चा करे तो बढ़ती आर्थिक असमानताऐ, जहाँ शीर्ष 5% आबादी के पास 40% से अधिक धन होने की बात करती है, तो भूखमरी सूचकांक, भूख से पीड़ित व्यक्तियो की छवि हमारे सामने लाते है, इसी संदर्भ मे महात्मा गांधी का कथन "दुनिया की एक बड़ी आबादी इस तरह पीड़ित है, की उसे ईश्वर केवल रोटी के रूप मे दिखायी देता है।"

तब इन समस्याओ के विरुद्ध नवाचारी मार्ग भी इन असुरक्षाओ से ही उत्पन्न हुये है, तब ही तो खाद्यसुरक्षा जैसे कल्याणकारी कार्यक्रम, वैश्विक शान्ति के लिए नोबल पुरस्कार जीतने वाले विश्व खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम व हरपेट के लिए भोजन के नारे के साथ हरित क्रान्ति की ओर हम बढ़ पाये।

Call us : 8468022022 Visit us : www.visionias.in

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

विश्व को आर्थिक असुरक्षा से बचाने का ही नवाचार आप अन्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक, जी-20 जैसे संगठनों में देख सकते है।

यदि आर्थिक असुरक्षा से आगे बढ़ि छोड़ाई जाए तो राजनीतिक असुरक्षा को देख सकते है जहाँ दमनकारी शोषणकारी सत्ता द्वारा दमन व विद्वान जार्ज ऑरवेल के उपन्यास 1984 में वर्णित डायस्टोपिया राज्य विरुद्ध व्यक्ति का सामाजिक समझौता व राज्यसत्ता विरुद्ध मानवाधिकारों की घोषणा को आप देख सकते है।

इतिहास गवाह है की जब जब राजनीतिक असुरक्षा बढ़ी है हमने व्यवस्थाएं परिवर्तित होती देखी है फिर चाहे वह फ्रांसीसी क्रांति का नारा "स्वतन्त्रता समानता बन्धुत्व" का हो अथवा "प्रतिनिधित्व नही तो कर नही" के नारे के साथ

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

आगे बढ़ने वाली अमेरिकी क्रान्ति अथवा उपनिवेशवाद के विरुद्ध तृतीय विश्व के राष्ट्रवादी आन्दोलन हो।

उसी प्रकार धार्मिक असहिष्णुता से उत्पन्न साम्प्रदायिकता व धार्मिक असुरक्षा विरुद्ध नवाचारी बदलाव के रूप में मार्टिन लूथर का 100 थीसिज व स्वामी विवेकानन्द के 'पश्चिम के भौतिकतावाद व पूर्व के अध्यात्मवाद" मध्य जमन्थय के दर्शन में देखा जा सकता है।

यह धार्मिक असुरक्षा ही तो थी जिसने विश्व को "सर्व धर्म समभाव" के दर्शन पर आगे बढ़ने व परम्परा में बदलाव लाने को प्रेरित किया। तब ही ज्योतिबा फुले जैसे व्यक्तियों ने धार्मिक झूठी मान्यताओं को चुनौती दी व अधिक तार्किक दृष्टिकोण व रचनात्मकता का परिचय दिया।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अब व्यक्तिगत असुरक्षा की चर्चा करें तो व्यक्ति के होने व मृत्यु के भय से उत्पन्न असुरक्षा ने ही व्यक्ति को दार्शनिक चिंतन की ओर बढ़ावा दिया।

विद्वान रोबर्ट बल्ला कहते हैं,

व्यक्ति की मानसिक असुरक्षाओं विरुद्ध दार्शनिक सन्तुष्टि एक महत्वपूर्ण सुरक्षा व लाभकारी मार्ग है।

इसी प्रकार विक्टर ई फ्रैंकल अपनी पुस्तक मैन सर्च फॉर मीनिंग में चर्चा करते है किस प्रकार उन्होंने हिटलर के कैम्पो के असुरक्षा के वातावरण में भी जहाँ वे अपने साथियों को अपने सामने दम तोड़ते देख रहे थे, उन्होंने मानसिक चिंतन आत्म नियंत्रण संयम द्वारा आत्मअसुरक्षा की भावना को समाप्त किया।

ऐसा ही विवरण विश्व स्वास्थ्य संगठन के हाल के अध्ययन बताते है की किस प्रकार व्यक्तिगत असुरक्षा की भावना ने मानसिक स्वास्थ्य

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

आत्महत्या की दर को बढ़ाया है, इसी समस्या को एमाइल दुर्खिम अपनी रचना सुसाइड में विस्तार से वर्णन करते है व आत्महत्या को विविध असुरक्षाओ का योग बताते है।

तब ऐसी व्यक्तिगत असुरक्षाओ के विरुद्ध नवाचारी मार्ग के रूप में माइंडफुलनेस ऑनलाइन मेडिटेशन व हाल ही में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा गठित विश्व खुशहाली आयोग के संदर्भ में देखा जा सकता है।

इस तरह हम अब तक की अपनी चर्चा से असुरक्षा की व्यापक समझ विकसित कर चुके है, जो यह दर्शाती है की विविध भौतिक आर्थिक सामाजिक राजनीतिक धार्मिक व्यक्तिगत असुरक्षाओ ने नवाचार रचनात्मकता के लिए ~~विश्व~~ व्यक्ति व विश्व को प्रेरित किया है, परन्तु इसका दूसरा पक्ष भी विचारणीय है,

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जब असुरक्षा से रचनात्मकता नवाचार की संभावना समाप्त हो जाती है, आप महिलाओं के विरुद्ध ग्लास सीलिंग प्रभाव से इसे समझ सकते हैं, आप औसत अभिभावक से ये पूछ सकते हैं की वे अपनी बालिकाओं को स्वयं से डर पढ़ने क्यों नहीं भेजते ?

आप पायेंगे इसमें उनकी सुरक्षा प्रति असुरक्षा की भावना निहित है जो उनके आगे बढ़ने, नवाचार व जीवन की संभावनाओं को सीमित कर देती है।

उसी प्रकार जॉन प्रॉक्टर अपनी पुस्तक "द आर्ट ऑफ लिविंग" में चर्चा करते हैं, की असुरक्षा की भावनाएँ व्यक्ति के मानसिक अवस्था को कुंद बना देती है वह नया विचार नहीं कर पाता स्वयं में हीनता का अनुभव करता है।

इसी तरह व्यक्ति जोखिम भय के प्रति इतना अधिक असुरक्षित होता है की वह

VisionIAS

नये मार्ग नये अविष्कार सोच ही नही पाता यदि ऐसा नही होता तो इतने लम्बे समय अन्तराल का समय हमे भूत के गुरुत्वाकर्षण सीखने मे नही लगता।

व्यक्ति परम्पराओ मे बंधकर रहना चाहता है, क्योकी इससे उसे सुरक्षा की भावना प्राप्त होती है व असुरक्षा उसे भयावह प्रतीत होती है।

इसी प्रकार कई खोजो ने असुरक्षाएँ मानव सभ्यता पर ही विपरीत प्रभाव डाल सकती है जैसे कोफी अन्नान कहते है

"सभी असुरक्षाओ मे स्वास्थ्य की असुरक्षा सबसे अधिक अमानवीय है, जिसे झेला नही जा सकता है।"

ऐसी ही बात आप "द ओरिजन ऑफ प्राइवेट प्रापर्टी फैमिली एण्ड स्टेट" मे मशहूर समाजवादी नेता फ्रेडरिक एंजेल्स भी लिखते है,

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

कि आप भूख व सभी प्रकार से पीड़ित असुरक्षित व्यक्ति से नवाचार रचनात्मकता की उम्मीद नही कर सकते हो।

तब हम यह तो अवश्य कह सकते है, असुरक्षा एक दो धारी तलवार है, जहाँ एक ओर असुरक्षा आवश्यकता से अविष्कार तक की यात्रा कर विविध क्षेत्रो मे युगान्तकारी परिणाम दे सकती है, तो कुछ क्षेत्रो मे असुरक्षा मानवीय गरिमा विरुद्ध भी जा सकती है, जिसे मानव समाज द्वारा नियंत्रित किया जाना चाहिए।

इस सन्दर्भ मे,

" हम सुरक्षा के बिना शान्ति को सम्भव नही बना सकते और सुरक्षा केवल समावेशी विकास से ही सम्भव है।"
(कोफी अन्नान)

" अतः सुरक्षित मानवीय गरिमा के साथ असुरक्षा नवाचार व रचनात्मकता की ओर ले जाती है।"

VisionIAS